जिम हैनसन

पुतलियों का खिलाड़ी

लेखन: कैथलीन क्रूल
चित्रांकन: स्टीव जॉनसन तथा ईथन फैंचर
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बड़े होकर तुम क्या बनना चाहते हो? शिक्षक? कवि? राष्ट्रपति? पर जिम हैनसन बड़े होकर भी कठपुतलियों से खेलते जाना चाहता था। अगर तुम दुनिया को बेहतर बनाना चाहते हो तो इसकी शुरुआत लोगों को हंसाने, खुश करने से की जा सकती है। सो सोलह साल की उम्र में जिम और उसके एक दोस्त ने अपनी खुद की पुतलियाँ बनाईं और उन्हें टीवी पर पहला काम मिला। कुछ समय बाद दुनिया भर के दर्शक जिम के मपैटस् - मेंढक किरमिट, बिग बर्ड और मिस पिगी को चाहने लगे। जिम के बचपन का सपना साकार हो गया; दुनिया एक बेहतर जगह थी और पुतलियाँ अब सिर्फ़ बच्चों के लिए नहीं बल्की सबके लिए थीं!

बच्चों के लिए जीवन्त व रोचक शैली में गैर-काल्पनिक साहित्य रचने वाली लेखिका कैथलीन क्रूल ने एक ऐसे शख़्स की प्रेरक कहानी लिखी है जो यह जानता था कि बड़े हो कर उसे क्या बनना है: इन्सानी खुशी का पूर्णकालिक रचनाकार।
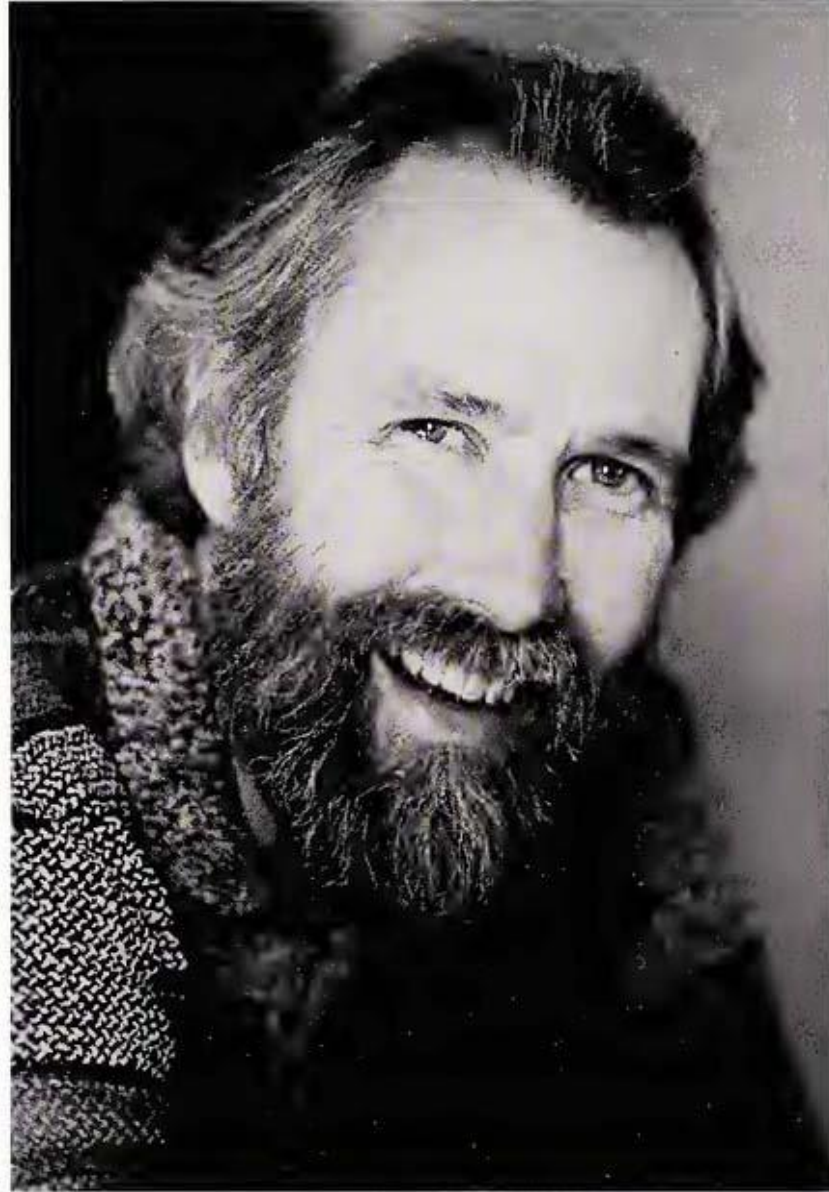
"जब मैं छोटा था मेरी ख़्वाहिश उन लोगों में से एक बनने की थी जो इस दुनिया में फर्क ला सकें।"

- जिम हैनसन (1936-1990)

जिम हैनसन

पुतलियों का खिलाड़ी

लेखन: कैथलीन क्रूल

चित्रांकन: स्टीव जॉनसन तथा ईथन फैंचर

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जिम हैनसन के परिवार के पास टीवी नहीं था। 1930 के दशक में किसी के पास टीवी नहीं था।

तो ऊर्जा से भरा कोई बच्चा अपना दिल लगाने के लिए भला क्या कर सकता था? अपने जूते उतार मिसिसिपि नदी के किनारे बीत रहे अपने जीवन से प्यार कर सकता था।

जिम के परिवार के बड़े-से फार्म हाउस के बिलकुल पास से एक छोटी नदी बहती थी। जिम और उसका भाई पॉल उसी में मच्छी पकड़ते और तैरते। गर्म उमस भरी रातों में वे दलदल के पास जुगनुओं को दमकते देखते और मेंढ़कों को टर्राते सुनते। प्रकृति को देखना, उसकी आवाज़ों को सुनना, गाना और कहानियाँ सुनना-सुनाना - यही उनके मनोरंजन का ज़रिया था।

दिवास्वप्न देखना और प्रकृति का अवलोकन करना जिम को व्यस्त रखता था। वह लेलैण्ड, मिसिसिपि के पशु-पक्षियों को बड़े ध्यान से देखा करता। वह अपने पालतू जानवरों की देखभाल भी करता - उसका कुत्ता टोबी, उसका टट्टू, कछुए, साँप, मेंढ़क। वह जो कुछ देखता उसके चित्र तो आँकता ही था, उन जन्तुओं के भी आँकता था जिनकी वह कल्पना करता। उसकी कॉपी में तमाम विचित्र जन्तुओं के चित्रों की भरमार थी जिनको उसने अपनी कल्पना के सहारे रचा था।

जिम के दादा-दादी के यहाँ खाने की मेज़ पर उसके चचेरे भाई-बहनों के बीच मज़ेदार किस्से सुनाने की होड़ रहती। जिम को चुप रह उनकी आपसी चुहल सुनना पसन्द था।

अपने परिवार में जिम अपनी दादी के सबसे क़रीब था। दोनों बरामदे में झूला कुर्सी पर घंटों झूलते। दादी सुन्दर दोहरें बनातीं, या उसे कहानियाँ सुनातीं - और सबसे ज़रूरी यह था कि वे उसकी तमाम कहानियाँ भी सुनतीं।

अमूमन वह अपने ख़याल अपने पास ही रखता। दूसरों को परेशान करना उसे पसन्द नहीं था।

अपने दोस्तों के साथ, जिनमें उसका जिगरी दोस्त किरमिट भी शामिल था, वह खेल खेलता। पर ये टोली वाले खेल नहीं होते (क्योंकि उनमें तो उसे सबसे आख़िर में चुना जाता था) बल्की पिंग-पौंग या टैनिस या बोर्ड गेम्स् होते थे, जो एक ही साथी के साथ खेले जाते थे।

जिम घर के पिछवाड़े में परिवार के लिए कार्यक्रम करता, इनमें वह घर में उपलब्ध चीज़ों का इस्तमाल करता। माँ की चादरों की अल्मारी से निकाली चादर और तौलिया? कुंडली मार कर रखे पौधों को पानी पिलाने के पाइप को साँप बना, वह संपेरा बनता, चादर को अपना चोंगा और तौलिए को पगड़ी बना लेता।

परिवार के बाहर के लोगों के सामने जिम ने अपना पहला प्रदर्शन तब किया जब वह बॉय स्काउट था। उसका एक साथी कुछ चुटकुले सुना रहा था, जिम उसके पीछे खड़ा हुआ। अपने हाथ साथी के गिर्द किए और उसके चेहरे के सामने एक रुमाल हिलाता रहा। दर्शक खूब हंसे-ठिठियाए। लोगों को हंसाना - जिम के लिए यही तो जादू था।

ऐसे मौके पाने के लिए जिम ने अपने स्कूल के नाटकों में भाग लिया। वह मंच के पीछे भी काम करता था।
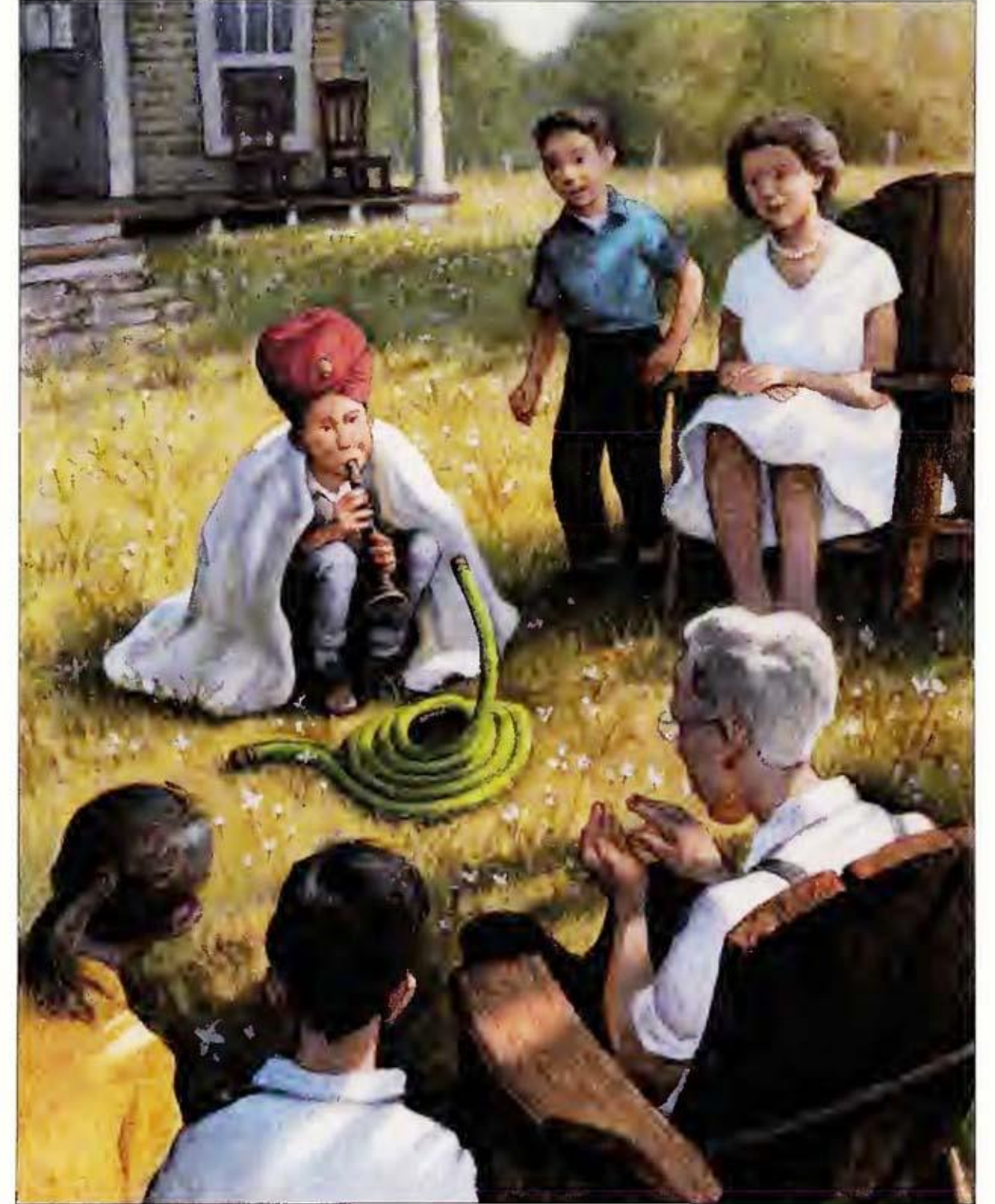
घर पर टीवी तो अब भी नहीं था, पर पॉल ने घर पर जोड़ा जा सकने वाला क्रिस्टल रेडियो बना लिया था। अब जिम स्कूल से जल्दी से घर लौटता ताकि रेडियो पर *ग्रीन हॉरनेट* और *द शैडोस्* जैसे कार्यक्रम सुन सके। इतवार की रात प्रसारित होने वाला वैंट्रिलोकिस्ट (जो मुँह हिलाए बिना आवाज़ निकाल सकते हैं) एडगर बर्गन का कार्यक्रम उसे बेहद पसन्द था। इसमें बर्गन लकड़ी से बने अपने पुतले चार्ली मैकार्थी से बातचीत करता था।

अख़बारों में छपने वाले धारावाहिक कॉमिक और कामिक क़िताबें जिम की कल्पना को हवा देती थीं। जिस तरह से फ्रैंक बाउम ने औज़ ॠंखला में पूरी बारीकी से एक जीवन्त दुनिया रच डाली थी उससे जिम बड़ा ही प्रभावित था।

वह कविताएं लिखता, चित्र आँकता। स्कूल की हरेक रिपोर्ट के साथ वह चित्र ज़रूर बनाता, चाहे शिक्षक ने ऐसा करने को कहा हो या नहीं।

शनिवार की दोपहर फिल्म देखने का समय होता। उसने जो पहली फिल्म देखी वह थी एमजीएम की *द विज़र्ड ऑफ औज़* । यह उसकी पसन्दीदा फिल्म बन गई - जब वह शेर की उस दहाड़ से डरना बन्द कर सका, जिससे हर एमजीएम फिल्म शुरू होती थी।

जिम की तेरहवीं सालगिरह ख़ास रही। एक दैनिक अख़बार ने उसका बनाया एक कार्टून छापा। यह उसका पहला प्रकाशन था।

अब तक उसका परिवार मेरीलैण्ड के हायेटस्विल में रहने लगा था। कुछ घरों अब में टीवी आ चुके थे। जिम अपने माता-पिता के पीछे पड़ गया कि वे भी टीवी ख़रीदें।

उन्हें फिक्र थी कि टीवी से बच्चों पर बुरा असर पड़ेगा, सो वे कुछ समय तक अड़े रहे। पर 1950 में आख़िरकार उन्होंने हथियार डाल दिए।

वह टीवी छोटा था, उसकी काली-सफ़ेद छवियाँ भी कुछ धुंधली थीं। पर टीवी लोगों को जोड़ता था - उसके परिवार की तरह, जब वे सब बैठक में साथ-साथ बैठ वे कार्यक्रम देखते, जो दरअसल कहीं और फिल्माए जा रहे हों। जिम को कई कार्यक्रम पसन्द आते थे, ख़ास तौर से *कुकला, फ्रैन और ऑली* नामक एक कठपुतली कार्यक्रम। इसके किरदार कुकलापॉलिटन प्लेयर्स कहलाते थे। इस कार्यक्रम को देख पूरा परिवार हंसता था।

जिम के पिता जीव-विज्ञानी थे, वे चाहते थे कि जिम विज्ञान के क्षेत्र का कोई पेशा चुने।

पर अब तक बहुत देर हो चुकी थी। कुछ ही सालों में जिम टीवी पर कोई काम तलाशने वाला था। पुतलियों से खेलने के विचार में तमाम संभावनाएं थीं।

कुछ लोगों को पुतलियाँ बचकानी लगती थीं, पर जिम सचमें टीवी पर उतरना चाहता था। उसने स्कूल के पुस्तकालय से कठपुलियों की क़िताबें ले कर पढ़ीं। हाई स्कूल के कठपुतली क्लब का हिस्सा बना ताकि पुतलियाँ बनाना सीख सके।

एक दिन उसने एक विज्ञापन देखा। शनिवार की सुबह प्रसारित होने वाले एक कार्यक्रम को मैरियोनैटस् (तारों से चलाई जाने वाली कठपुतलियाँ) चला सकने वाले कुछ युवाओं की दरकार थी। जिम और उसके दोस्त ने फ्रांसीसी चूहा पिएर, दो काउ बॉय – लौंगहॉर्न और शॉर्टहॉर्न बनाए, और विज्ञापन का जवाब दिया।

उन्हें काम मिल गया। सोलह बरस का जिम अब टीवी पर पुतलियों से खेल रहा था!

पर उसके पिता का मानना था कि पुतलियाँ चलाना कोई असली पेशा नहीं उपलब्ध करवा सकता। सो जिम ने कॉलेज में विज्ञान लेने की कोशिश की। पर कला की कक्षाओं ने बाज़ी जीत ली, जो विज्ञान से कहीं ज़्यादा रोचक थीं। कला की ये कक्षाएं अक्सर होम इकोनॉमिक्स (गृह विज्ञान) विभाग में होती थीं। यहाँ पाँच सौ भावी गृहणियों व माताओं के साथ पढ़ने वाले छह पुरुषों में एक जिम भी था। जिम का मुख्य विषय (मेजर) गृह विज्ञान था, पर साथ में उसने कठपुतलियों की, पोशाकें डिज़ाइन करने की, और विज्ञापन कला की कक्षाएं भी लीं।

कॉलेज में पढ़ने दौरान जिम को अपना खुद का टीवी कार्यक्रम भी मिला - *सैम एण्ड फ्रैन्डस्* । इसको सैम नाम वाली एक गंजी कठपुतली प्रस्तुत करती थी। यह पाँच मिनट की पुतली कॉमेडी वॉशिंगटन डी.सी. चैनल पर दिन में दो बार दिखाई जाती थी।
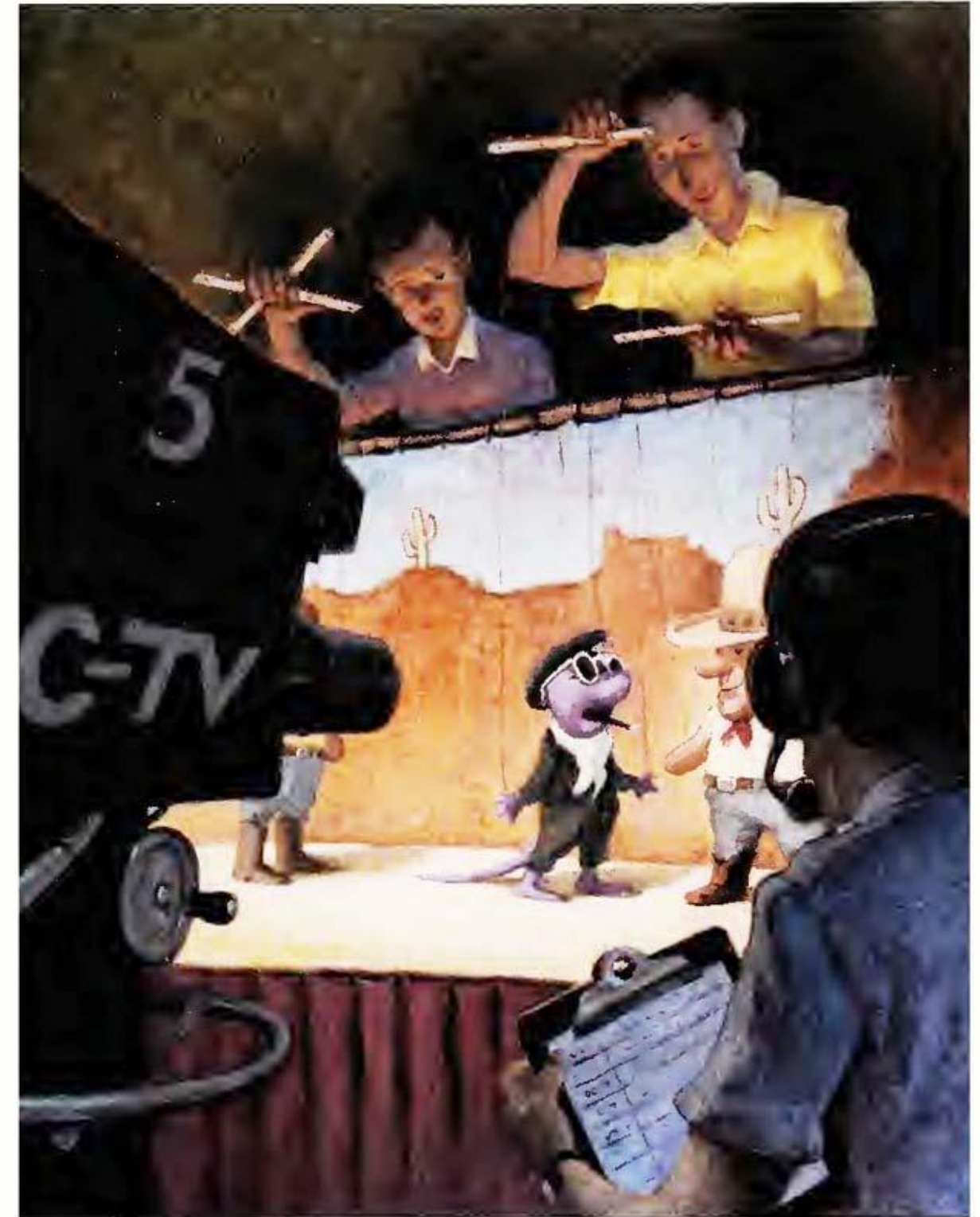
जिम चाहता था कि उसकी पुतलियाँ मुस्कुरा सकें, गुस्से में अपनी भौंहे तान सकें या दूसरी भावनाओं को व्यक्त कर सकें। इसलिए उसने लकड़ी के बदले रोएंदार कपड़े से मशमैन, इकी गंक और सैम के अन्य दोस्त बनाए। सैम के दोस्त मेंढ़क किरमिट को बनाने के लिए उसने अपनी माँ के एक पुराने हरे रंग के कोट को लिया, उसे विचित्र आकार में काट कर सिया। तब पिंग-पौंग गेंद को बीच से काटकर उसकी आँखें बना चिपका दीं। वह अपनी पुतलियों की आँखें कुछ भेंगी बनाता था ताकि पुतली और भी हंसौड़ी लगे।

वह आइने के सामने खड़ हो घंटों अभ्यास करता ताकि पुतली की हरेक हरकत बिलकुल सटीक हो और वह भावनाओं को सही तरह से अभिव्यक्त कर सके। अपने जिन बेवकूफी या विनोदपूर्ण विचारों को वह अमूमन अपने तक सीमित रखता था, उन्हें वह पुतली चलाते वक़्त संवाद में बदल बोलता भी जाता था।

परंपरागत रूप से कठपुतलियों का खेल दिखाने के लिए एक डिब्बेनुमा मंच होता था। जिम ने उसे हटा दिया - अब टीवी का परदा ही उसका मंच था। इसका मतलब था कि कैमरे की नज़र से नीचे, उँकडू बैठ पुतलियों को सिर से ऊपर उठा चलाना पड़ता था। लगातार उन्हें इस तरह नचाने-चलाने की बदौलत बाज़ुएं दुखती थीं। पर रंगीन टीवी की तकनीक का फ़यदा उठा जिम ने अपनी पृष्ठभूमि को जीवन्त, खुशनुमा रंगों से भर दिया।

जिम की कठपुतली कक्षा की एक सहपाठिन थी जेन नेबेल। जिम ने उससे मदद मांगी। अपनी इन पुतलियों को जिम ने 'मपैटस्' नाम दिया। यह मज़ेदार शब्द 'मैरियोनेटस' (तारों से चलाई जाने वाली पुतलियाँ) और 'पपैटस्' (सामान्य पुतलियाँ) के जोड़ से बना था।
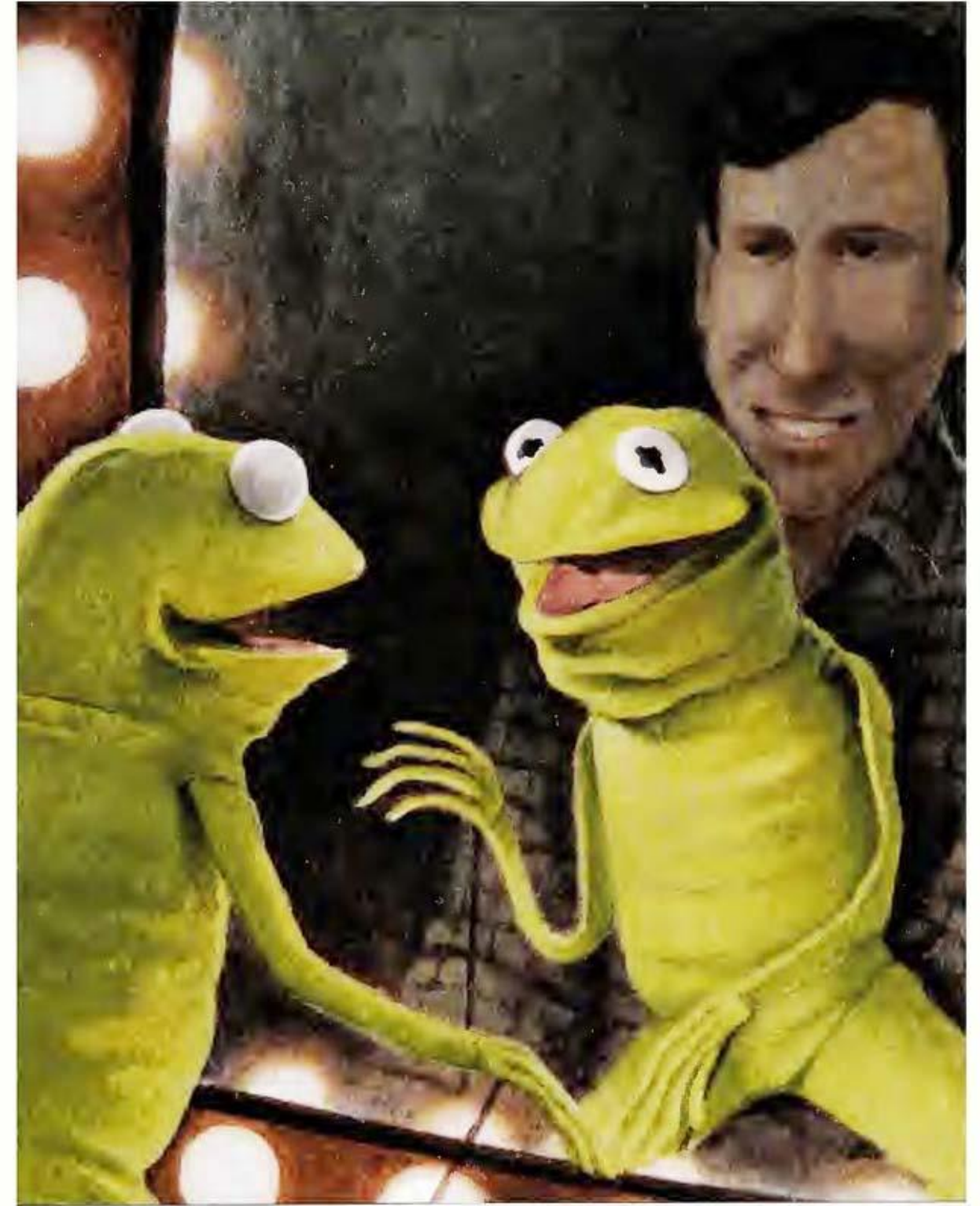
सैम एण्ड फ्रैन्डस् कार्यक्रम छह वर्षों तक कामयाबी के साथ प्रसारित होता रहा। जिन लोगों ने जिम के साथ इसमें काम किया था वे उससे प्रभावित हुए।

"यह बच्चा तो जीनियस है!"

"चमत्कार...बच्चों से लकर परदादियों तक, सबको यह कार्यक्रम पसन्द आता है।"

"हमने ऐसा कुछ पहले देखा ही नहीं।"

जिम कॉलेज के स्नातक उत्सव में किसीसे ख़रीदी पुरानी रोल्स रॉयस में पहुँचा, जो उसने अपनी कमाई से ख़रीदी थी और गृह विज्ञान विभाग से अपनी डिग्री ली।

फिर भी एक वयस्क आदमी का पुतलियों से खेलना? खुद जिम का मन भी शंकाओं से भरा था।

सो वह चित्रकारी करने युरोप चला गया। वहाँ अपने खाली समय में वह कठपुतली कार्यक्रम देखने जाता और मशहूर पुतली चालकों से मुलाक़ात करता। वे इस कला को बचकाना नहीं, कला की एक गंभीर विधा मानते थे। जिम ने जाना कि सदियों से दुनिया भर के लोग अपने अनुष्ठानों, मनोरंजन, वाद-विवाद आदि के लिए पुतलियों का उपयोग करते रहे हैं।

अमरीका वापस लौटने पर जिम को भरोसा हो गया कि पुतलियाँ बचकानी नहीं हैं। उन्होंने एक कम्पनी बनाई - मपैटस् इन्कॉर्पॉरैटिड। और जेन से शादी कर ली।

1960 के दशक के दौरान हैनसन के मपैटस् ने टीवी विज्ञापनों तक को देखना मज़ेदार बना दिया। ये किरदार सैकड़ों व्यावसायिक विज्ञापनों में साबुन से लेकर कुत्तों का खाना तक बेचते दिखाई देते। जिम और मेंढ़क किरमिट जैसे मपैटस् लोकप्रिय टीवी कार्यक्रमों में, जैसे *द एड सलिवन शो* में, मेहमानों की तरह बुलाए जाने लगे।

जिम अपनी कल्पना को उड़ान देने के दूसरे तरीकों के साथ, जैसे फिल्में बनाना, प्रयोग करने लगे। उनकी कुछ परियोजनाएं कामयाब रहीं तो कुछ नाकामयाब। पर नाकामयाबी ने उन्हें नया कुछ करने से कभी नहीं रोका।

जिम के प्रेरणा के पल तब आते जब वे बाहर सुकून भरे माहौल में होते या फिर अपने दफ्तर की आरामकुर्सी पर पसरे होते। पर वे यह कभी नहीं भूले कि कैलिफोर्निया के एक पेड़ के तले प्रकृति के सौन्दर्य से स्तब्ध खड़े हो वे पत्तियों को सूरज की रोशनी में झिलमिलाते देखा करते थे। उस पल जो भी कागज़ हाथ लगता उसे वे उठाते और अपनी चटक रंगों वाली फैल्ट पैनों से आँकना शुरू की देते।

मपैटस् को पेश करने के पन्द्रह साल बाद, वे तैंतीस वर्ष के थे और टीवी के मशहूर शख्सियत भी।

1968 के एक दिन उनके पास एक फोन आया जिसने उनकी ज़िन्दगी बदल दी। फोन फिल्म निर्माता जोएन गांज़ कूनी का था। उन्होंने जिम से कहा कि कई अध्ययनों से पता चला है कि शाला पूर्व शिक्षा बच्चों के जीवन पर असर डालती है। पर ग़रीब बच्चों की अमूमन शाला पूर्व शिक्षा तक पहुचँ ही नहीं है। पर उनके घरों में भी टीवी होता है। क्या टीवी का उपयोग सिखाने के लिए किया जा सकता है? और क्या जिम की मपैटस् कम्पनी शाला पूर्व बच्चों के लिए एक नया कार्यक्रम बनाने में मदद करेगी?

जिम हिचकिचाए। उस कार्यक्रम का नाम भी बड़ा विचित्र था - *सैसमी स्ट्रीट* । जोएन ने स्पष्ट किया कि अरब देश की विख्यात कहानी में खज़ाने का दरवाज़ा खोलने के लिए 'खुल जा सिमसिम' का जो आदेश दिया जाता है, उसीके आधार पर कार्यक्रम का नाम रखा गया है कि वह छोटे बच्चों के दिमाग़ को खोलेगा। पर जिम को शंका थी, क्योंकि वे अपने मपैटस् को सिर्फ़ बच्चों तक सीमित नहीं करना चाहते थे।

पर सालों से अपने खुद के बच्चों के अवलोकन ने उन्हें भरोसा दिलाया। वे अपने बच्चों को बड़े ग़ौर से देखते थे, यह जानने की कोशिश करते कि उन्हें क्या हंसाता है, वे उनकी कहानियाँ सुनते, उनकी कल्पना को प्रोत्साहित करते। उन्हें लगा कि हो सकता है कि टीवी का उन पर अच्छा प्रभाव पड़े। खास कर उस ख़ौफनाक दौर में जब कुछ लोगों को लग रहा था कि पूरा देश ही बिखर रहा है। संभव है उनका योगदान स्थिति को कुछ बेहतर बना सके।

कम से कम वे कार्यक्रम में हंसी-मज़ाक तो जोड़ सकेंगे ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि अपने ऊँचे लक्ष्यों के बावजूद कार्यक्रम घिसे-पिटे उपदेशों से न भरा हो। साथ ही यह एक बड़ा प्रयोग था। और जिम को प्रयोगों से प्यार तो था ही।

प्रतिभाशाली लेखकों, संगीतकारों के एक दल के साथ जोएन की नई चिल्ड्रन्स् टेलिविज़न वर्कशॉप में जिम की कम्पनी काम में जुट गई।

मेंढ़क किरमिट वैसे ही तैयार था। जल्द ही एक चिड़चिड़ा जीव आया जो कूड़ेदान में रहता था – ऑस्कर द ग्राउच । तब दो बिलकुल फ़र्क किस्म के दोस्त बर्टी और अर्नी की कल्पना की गई। एक भूखा जीव बनाया गया जिसका नाम कुकी मॉन्स्टर था। तब बिग बर्ड नाम वाली एक बड़ी चिड़िया, तब और भी कई किरदारों को रचा गया।

जिम ने कड़ी मेहनत की, चटक रंगों में हरेक नए मपैट का चित्र बनाया। तब उसकी रचना में दिशा दी। हरेक किरदार के व्यक्तित्व व आवाज़ के पीछे उनका योगदान था, जो अक्षर, अंक और तमाम दूसरी अवधारणाओं को सीखना मज़ेदार बना देता था।

इतने सारे रचनात्मक लोगों के साथ काम करते हुए जिम इतना धीमे बोलते थे कि लोगों को उनकी बात सुनने के लिए आगे झुकना पड़ता था। कोई उम्दा विचार सुन वे खिलखिला पड़ते और अगर उसे बेहतर बना पाने की गुंजाइश होती तो कहते 'हम्म्म्म!' उनकी सबसे बड़ी तारीफ़ थी 'लवली!', नहीं तो वे कहते इसे और विनोदपूर्ण बनाया जा सकता है।

सैसमी स्ट्रीट का प्रसारण 10 नवम्बर 1969 से शुरू हुआ। जिम सेट पर फिरकनी से इधर से उधर दौड़ रहे थे ताकि सब कुछ पूरी तरह तैयार हो। वे अर्नी, किरमिट व अन्य मपैटस् की नकनकायी आवाज़ भी देने वाले थे। उन्होंने कार्यक्रम के लिए कुछ छोटी एनिमेटेड फिल्में भी बनाई थीं। और तो और एक बार गिनती के एक प्रसंग में वे खुद जिम हैनसन के ही रूप में तीन गेंदों को हवा में एक साथ उछालते हुए आए।

प्रसंग में उनका तकिया कलाम था "तीन गेंदें!"

सैसमी स्ट्रीट अनूठा कार्यक्रम था -जिसमें शाला पूर्व बच्चों को सीखने में मदद करने के लिए हंसी-मज़ाक का इस्तेमाल किया गया था। बच्चों को नीचा या कमतर मान उपदेश झाड़े बिना। कार्यक्रम का वर्णन करने के लिए 'उत्तेजक' और 'क्रान्तिकारी' जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया।
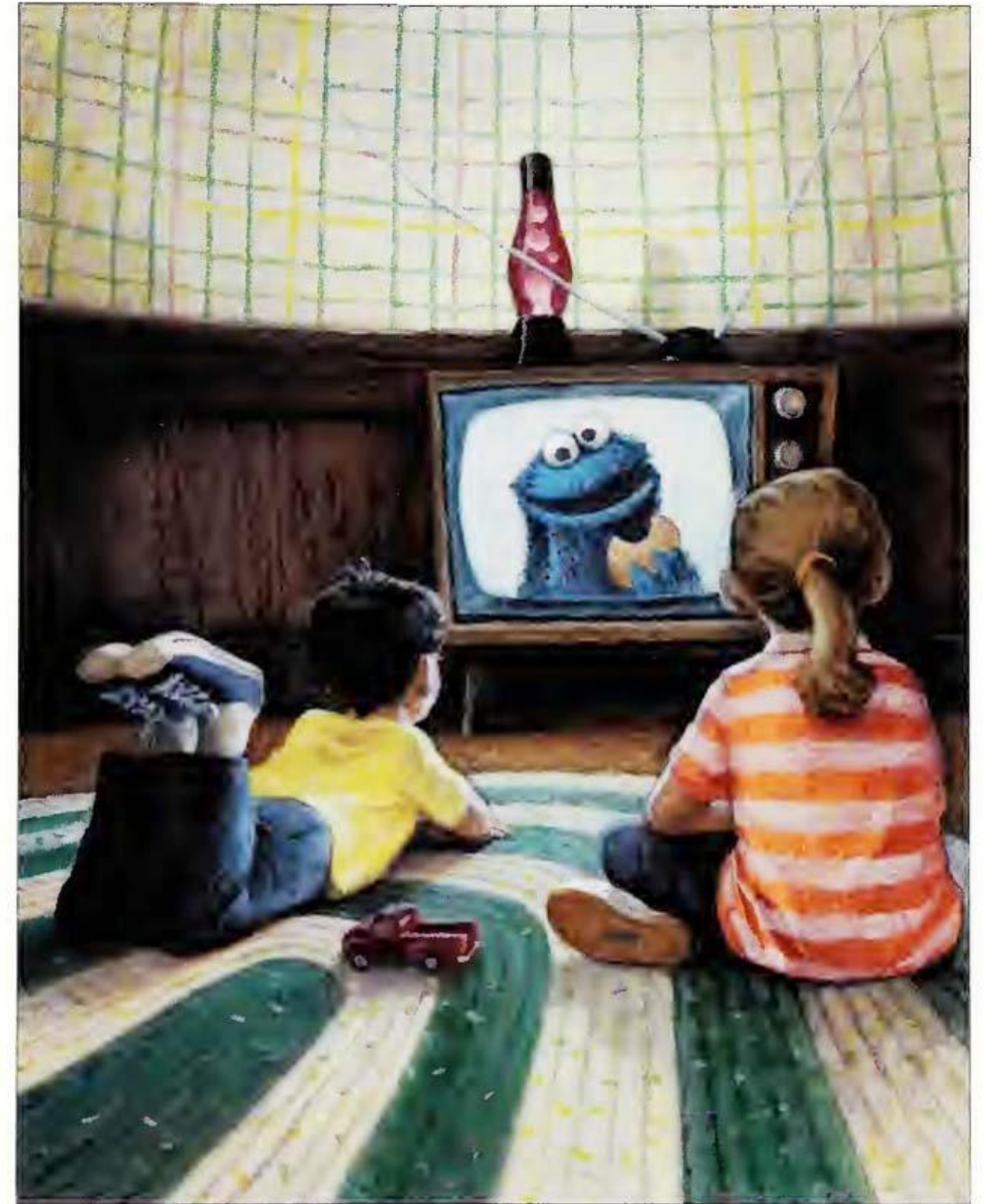
जल्द ही बर्ट, अर्नी और दूसरे किरदार दुनिया भर में मशहूर हो गए, स्कूल जाने की तैयारी कर रहे लाखों बच्चों के पक्के दोस्त बन गए।

सैसमी स्ट्रीट ने कई पुरस्कार जीते। बच्चों के कार्यक्रमों के इतिहास में यह सबसे प्रभावी और सबसे अधिक समय तक चलने वाला कार्यक्रम बना। इस सफलता में जिम के मपैटस् की भूमिका उतनी ही अहम थी, जितनी विनोद भरे संवाद और रोचक कथानक की। मपैटस् काफ़ी कुछ असली बच्चों जैसे थे, प्यारे, भींच कर गले लगाने लायक, खोपड़ा चकरा देने वाले, लालची, पर साथ ही हंसते-मुस्कुराते। वे आदर्श या मधुर-मीठे नहीं थे, वे सचमें मज़ेदार थे।

जिम के खुद के पाँच बच्चे - लीसा, शेरिल, ब्रायन, जॉन और हैदर - उन्हें प्रेरित करते रहे। बाद में उन्होंने भी कई तरह से कार्यक्रम की मदद की।

अपने छह घरों के बीच चकरघिन्नी से जाते-आते, कई योजनाओं पर सोचते-विचारते जिम, साथ ही कई फिल्म और टीवी परियोजनाओं की निगरानी भी करते थे, जिनमें तरह-तरह से पुतलियों के साथ खेलने के विकल्प हों।
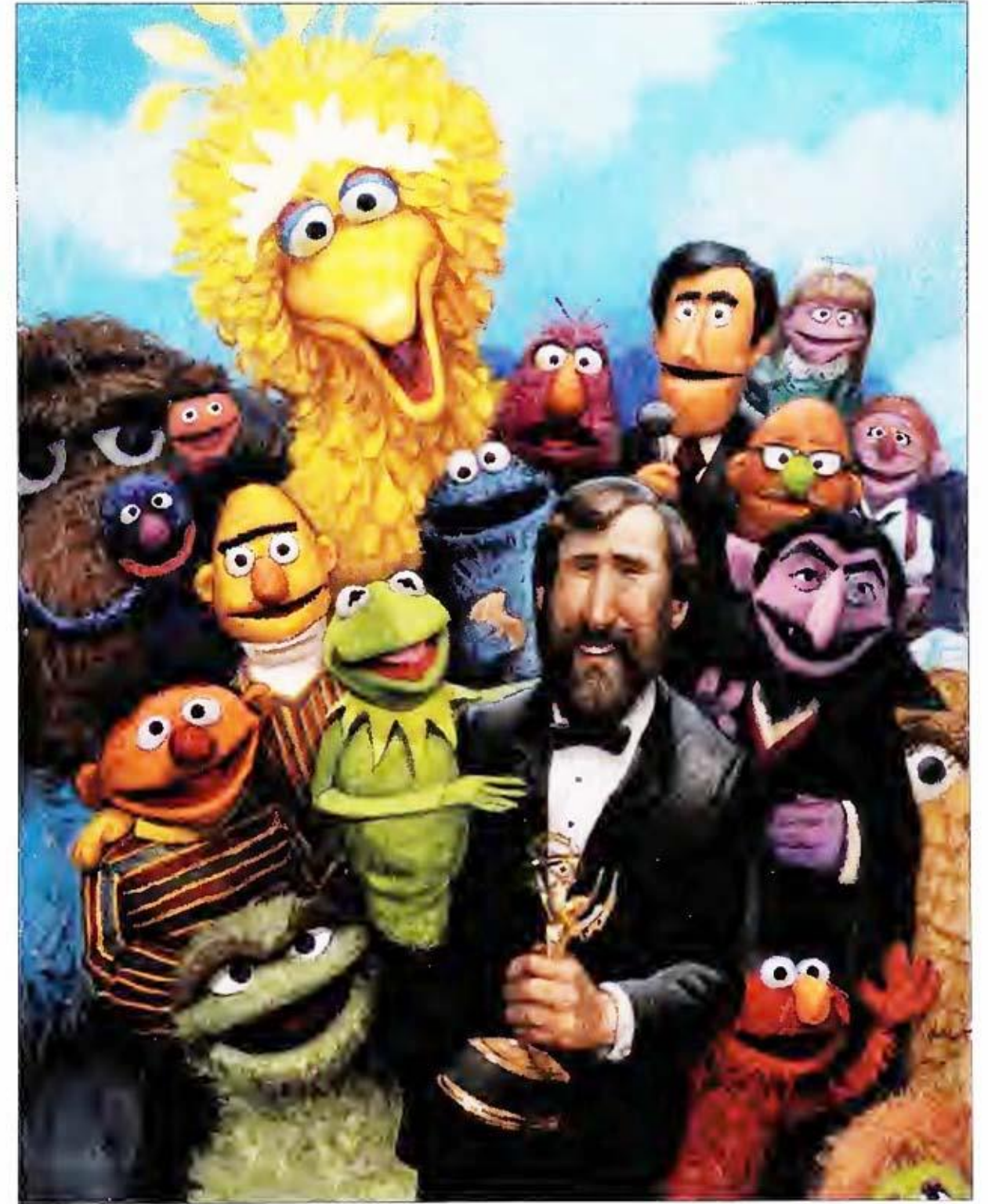
मपैटस् कम्पनी ने 1975 में *सैटरडे नाइट लाइव* की पहली कड़ी पेश करने में मदद की। तब खुद अपना कार्यक्रम भी शुरू किया - *द मपैट* शो । इसमें किरमिट, मिस पिगी और क्रमशः हर उम्र के चार सौ किरदार जुड़े। जिम का सपना था पूरे परिवार के लिए एक कार्यक्रम बनाना - उस तरह का साफ़-सुथरा मनोरंजन पेश करना जो उसे अपने परिवार के साथ मिसिसिपि में पसन्द आता था। मपैटस् दुनिया के इतिहास में सबसे लोकप्रिय पुतलियाँ बनीं, जो हर सप्ताह साढ़े तेइस करोड़ लोगों को हंसाती थीं।

जिम ने कई सफल मपैट फिल्में बनाईं। साथ ही दूसरों की कई परियोजनाओं पर भी काम किया। उन्होंने *स्टार वार्स: द एम्पायर स्ट्राइक्स* बैक में जेडाई मास्टर योडे की परिकल्पना में मदद की/ *टीनएज म्यूटेंट निन्जा टर्टल्स* की फिल्मों में कई जन्तुओं की परिकल्पना में भी उन्होंने मदद की। वे साथ ही अपनी प्रायोगिक फिल्में भी बनाते रहे, पर मपैटस् के साथ नहीं। ये गंभीर फिल्में जैसे *द डार्क क्रिस्टल* या *लैबेरिन्थ* सबको पसन्द नहीं आईं, पर जिम के प्रयोग अनन्त थे।
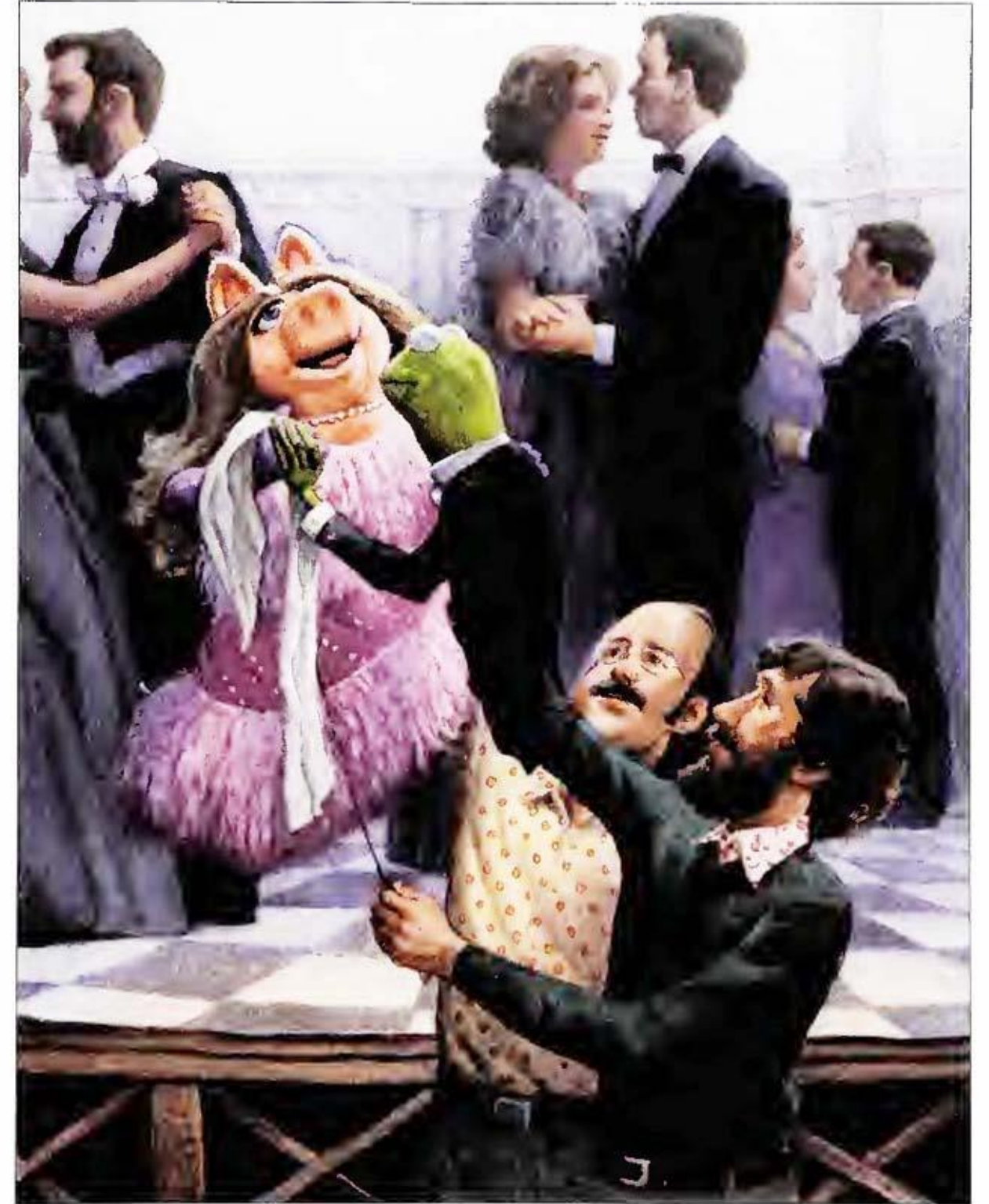
जिम को जानने वालों और लाखों उन लोगों के लिए भी, जो व्यक्तिगत रूप से उन्हें जानते तक न थे, यह समाचार दुखद था कि एक छोटी-सी बीमारी के बाद त्रेपन साल की आयु में उनकी मौत हो गई।

उनकी प्रार्थना सभा में हज़ारों लोग आए। जिम की इच्छा के अनुरूप सबने चटक रंग के कपड़े पहने, न्यू ऑर्लिन्स के एक जैज़ संगीत दल ने खुशनुमा संगीत बजाया। आख़िर में सबने हर रंग की तितली की पुतलियों को हिला जिम के काम का जश्न मनाया। अपनी जीवन्त कल्पनाशक्ति और पुतलियों के साथ उनके खिलंदड़पन के कारण जिम हैनसन, दुनिया पर अपनी छाप छोड़ सके, फ़र्क ला सके।
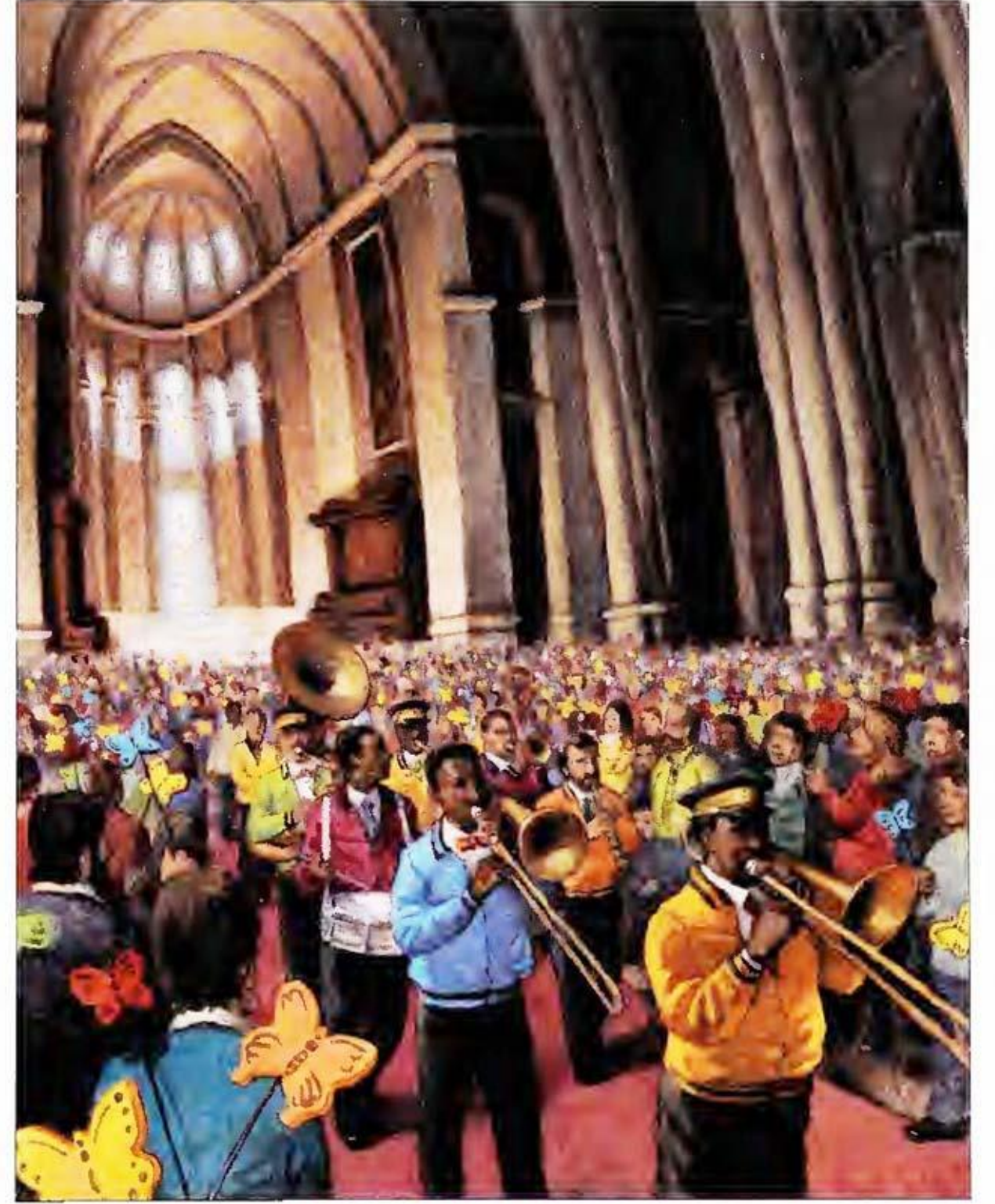
हमेशा खिलंदड़ बनी रहने वाली डालिया हार्टमैन बर्गसेगल व रॉबिन हैनसन के लिए तथा जैनेट शूलमैन की स्मृति को समर्पित।

- के.के.

जैनेट शूलमैन के लिए जिनके साथ काम करना खुशी देता था, गहरे आभार के साथ।

- एस.जे तथा एल.एफ़